दम मदार - बेड़ा पार

करामाते कुतुबुल मदार

"अल मारूफ़"

मदार का चाँद

मोअल्लिफ़ व मुरत्तिब

सय्याहे एशिया-ओ-अफ्रीक़ा-ओ-अरब

ख़ादिमे मदारियत शेखुल मशाएख़ अल्हाज

सैय्यद महज़र अली जाफ़री वक़ारी मदारी

सज्जादए आज़म ख़ानकाह मदारूल आलमीन

मकनपुर शरीफ़, कानपुर नगर (यू.पी) इण्डिया मो. 7860733151

दम मदार بسم الله الرحمن الرحيم बेड़ा पार

करामाते कुत्बुलमदार

अलमारूफ

मदार का चांद

मोअल्लिफ

सय्याहे एशिया-ओ-अफ्रीका-ओ-अरब

ख़ादिमे मदारियत शेखुल मशाएख़ अलहाज

सैय्यद महज़र अली

जाफ़री वकारी मदारी

सज्जादा-ए-आज़म ख़ानकाह मदारूल आलमीन

(इमाम मरकज़ी जामा मस्जिद)

मकनपुर शरीफ़ कानपुर नगर (यू.पी.) इण्डिया

जुम्ला हुकूक़ बिहक़्क़े नाशिर महफ़ूज़

नाम किताब	–	मदार का चांद
मुसन्निफ़ व मोअल्लिफ़	–	सैयद महज़र अली जाफ़री
प्रूफ़ रीडिंग	–	सैयदा इक़रा व ताहा जाफ़री
प्रिन्टिंग	–	अलमदार ऑफसेट, कानपुर
सन इशाअत	–	जुलाई 2016
सफ़हात	–	36
तादाद	–	1000
क़ीमत	–	35/–

मिलने का पता

हज़रत सैयद इनामुर्रब उर्फ औसत अली
जाफ़री वकारी मदारी
दारून्नूर मकनपुर शरीफ़ ज़िला कानपुर (यू.पी.)
पिनकोड – 209202
फोन – 08934892083

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

मज़ामीन	सफ़ा नम्बर
इन्तिसाब	4
तम्हीद	5
पैदाईश	7
न खाने पीने का राज़	9
नसीबा का नसीब	11
फैज़ाने मदारुल आलमीन	16
काबाए अहले नज़र	17
मदारुल आलमीन अजमेर में	21
गोश्त के टुकड़े का रोना	22
अन्धे की आँखों में रोशनी हो गई	23
काज़ी साहब शोला खा गए	24
औरत मर्द हो गई	25
कुएं में सैलाब	26
सूखा पेड़ हरा हो गया	28
फूल की बातें	29
डूबी कश्ती निकल गई	30
मुर्दा खोपड़ी बोल उठी	30
तसर्रुफाते कुत्बुल मदार	32
लोहे के चने चबाना	33
फैज़ाने मदार रज़ी अल्लाह अनहु	34
जानदार का जनाज़ा	35
तासीरे दुआ	36

इन्तिसाब

अपने वालिद माजिद व पीरो मुर्शिद हज़रत सैयदना कुतबे आलम मौलाई अबुलवक़ार सैयद कल्बे. अली जाफ़री मदारी व अपनी वालिदा सैयदा नुज़हतुन्निसा जाफ़री के नाम जिनकी तरबियत से मेरे दिल को सोज़े इश्के रसूल और औलिया अल्लाह का एहतिराम हासिल हुआ।

रेज़ा–ए–कूचए मदार
सैयद महज़र अली जाफ़री
वक़ारी मदारी
फोन नम्बर – 09935586434

तम्हीद

अल्लाह तबारक व ताला ने गुमराहों को रास्ता दिखाने के लिए नबियों और रसूलों की पाकीज़ा जमाअत को दुनिया में भेजा। तमाम अम्बिया व मुरसलीन ने भटके इन्सानों की रहबरी का काम अन्जाम दिया इस करानामें में इन अल्लाह के बरगुज़ीदा बन्दों को कितनी तक्लीफों और परेशानियों का सामना करना पढ़ा और कैसे मसायबों गमों आलाम बर्दाश्त करने पड़े जहाँ नबीयों और रसूलों पर इनकी क़ौमों ने जुल्म व तशददुद के पहाड़ तोड़े वहीं अक्सर औक़ात उनके नबी और रसूल होने की दलील मांगी रिसालते नबुवत की जब दलील मांगी गई तो नबियों और रसूलों ने अल्लाह के अता कर्दा मौजज़ात के ज़रिये दलील पेश की जैसे कि सरदारे अम्बिया व रसूल से कहा गया कि अगर आप अल्लाह के नबी हैं । तो चाँद के दो टुकड़े कर दीजिए आप ने अपनी नबुवत व रिसालत के अलावा मौजज़ात के ज़रिए बहुत से काम अंजाम दिये। जब नबीयों की आमद का सिलसिला तमाम हुआ तब विलायत के ऑफताबों महताब दुनिया में तशरीफ लाए जिस तरह से अम्बियाए किराम को अल्लाह ताआला ने मौजज़ात से सरफराज़ फरमाया था इसी तरह औलिया को अल्लाह ताआला ने करामात से मुज़य्यन फरमाया । हर चन्द के करामत न विलायत की दलील है और न विलायत के लिए ज़रूरी है लेकिन अक्सर और बेशतर औलियाए किराम से करामतें ज़ाहिर हुई यूँ तो बहुत से औलियाए किराम गुज़रे हैं इनमें से एक अल्लाह के

बरगुज़ीदा वली हज़रत शहनशाहे औलियाए किबार सैय्यद बदीउद्दीन कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु हैं आप करामात के मुजस्सिमाँ थे यानी आपकी जिन्दगी हर नफस एक नई करामात पैदा करता था। 14 साल की उम्र के बाद आप का न खाना न पीना, चेहरे पर सात नकाब रहना, जिस्म पर मक्खी न बैठना और इसके अलावा वक्तन फवक्तन करामात का ज़हूर आप से होता रहा। उन करामात में से चन्द करामात इस किताब में आप हजरात के लिए नकल की जाती हैं शेख हाफिज़ मोहम्मद अहमद अलीगढ़ जो सिलसिलाए मदारिया के बेहद मुख़लिस हैं उनकी फमाईश और असरार पर इस किताब को मुकम्मल किया जाता है।

पैदाईश

हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन कुतुबुलमदार रजि० अल्लाह अन्हु की विलादत शहरे हलब मूल्के शाम में बरोज दो शम्बा यकुम शव्वाल-उल-मुकर्रम 242 हिजरी सुबह सादिक में हुई। जब आप पैदा हुये आप ने अपना सरे मुकद्दस झुकाया और पढ़ा "अशहदो अल्लाह इलाह इल्ललाहो व अशहदो अन्ना मोहम्मदन अब्दहु वरसूलहू" जिस कदर इस मुकाम पर औरतें थी सबने आपकी आवाज़ को अच्छी तरह सुना। आप के वालिद मोहतरम फरमाते हैं कि जो मेरे यहाँ बकरी थी उसने दूध देना बन्द कर दिया था। जब आपकी पैदाईश हुई इस कदर दूध दिया कि इतना दूध कभी नहीं दिया और जब आपकी उम्र 4 साल 4 महीने 4 दिन की हुई तो आप के वालिद मोहतरम ने आप की बिस्मिल्लाह के बाद आपको मौलाना हुजैफा शामी के सुपुर्द किया आप की तालीम मौलाना हुजैफा शामी की निगरानी में शुरू हुई आपने बहुत जल्द कुरआन शरीफ ख़त्म किया 12 साल की उम्र में आपने मुख़तलिफ़ उलूम में अच्छी खासी इस्तेदाद हासिल की इस के बाद तफासीर व हदीस में कमाल हासिल किया मुहदिदस मशहूर हुये 14 साल की उम्र में आप का शुमार उलमा में होने लगा । आप ने इसी पर इक्तिफ़ा नहीं किया बल्के इलमें कीमिया इलमें होमिया और इलमें सीमिया इलमे रिमिया में कमाल हासिल किया। आप चारों आसमानी किताबों के हाफिज़ व आलिम थे 14 साल की उम्र में आप ने अपने वालिद मोहतरम के दस्ते हक़ परस्त पर

सिलसिला जाफ़रिया में बैत और वालिदैन से इजाज़त लेकर आज़िमें हज्जे बैतुल्लाह हुये। व हिदायते गैबी से बैतुल मुकद्दस का सफ़र किया वहां पहुंच कर मस्जिदे अक़सा में माहे रजब 259 हिजरी को बायजीद बुस्तामी उर्फ तैफूर शामी से मुलाकात की और सिलसिलाए तैफूरिया में दाखिल हुए आप से इजाज़त लेकर हज्जो अरकान से फ़रागत पाई और कुछ दिन कयाम किया फिर मदीना-ए-मुनव्वरा की तरफ रवाना हुये वहां पहुँच कर बारगाहे सरदारे दो आलम सल्ललाहो अलैहे व सल्लम की चौखट में आँखें मली और मज़ारे मुकद्दस की ज़ियारत से मुशर्रफ हुए और रात सरवरे कायनात सल्ललाहो अलैहे वसल्लम ने अपने जमाल की ज़ियारत से मुशरर्फ फरमाया । अल गरज तालिमें रूहानी के लिए आपको हज़रत मौला अली करम अल्लाहो वज्ह के सुपुर्द फरमाया हज़रत मौलाए काएनात ने आप के लिए तमाम उलूमें ज़ाहिरी से मुकम्मल तौर पर सरफराज़ फरमा दिया।

न खाने पीने का राज़

एक दिन आप दरबारे रिसालत में हाज़िर होकर मुराकिब हुये हुजूरी हुयी सरवरे आलम सल्ललाहो अलैहे वसल्लम ने आपको हुक्म दिया "ऐ बदीउद्दीन हिन्दुस्तान जाओ वहाँ जाकर मख़लूके खुदा की हिदायत में कोशिश करो "आपका हुक्म पाते ही हिन्दुतान का सफर शुरू किया और जिस वक्त आप जहाज़ पर सवार थे आपने लोगों की हिदायत की तलकीन पर लोगों को आपका ये अमल न गवार गुज़रा और वह सरकार को बुरा भला कहने लगे अभी सफर आधा ही हुआ था कि जहाज़ पानी में डूब गया। आप एक तख्ते के सहारे किनारे तक पहुँचें।

एक शख्स ने आप का नाम लेकर सलाम किया आपने जवाब देते हुये दरयाफ्त किया के "तुम मेरे नाम से कैसे वाकिफ़ हो"? जबाव दिया "कौन नहीं आपके नाम से वाकिफ़" और हमराह उन्हे लेकर एक खूबसूरत बाग में ले गया जिसमें एक अज़ीमुश्शान इमारत थी वहाँ आपके जददेअमजद रहमते आलम सल्ललाहो अलैहे वसल्लम रौनक-ए-अफरोज़ थे आप ने सरकार की ज़ियारत होते ही बड़े अदब से सलाम पेश किया । आँ हज़रत सल्ललाहो अलैहे वसल्लम ने निहायत शफ़कतसे करीब आने का इशारा फरमाया आप रहमते आलम का इशारा पाते ही तख़्त के करीब पहुंचे और इजाज़त पाकर एक तरफ बैठ गये और दो शख़्स मरदाने गैब से हाज़िर हुए जिनके सरों पर ख़्वान लाल रखे हुये थे। उन दोनों ने रहमते आलम

सल्ललाहो अलैहे वसल्लम के सामने तश्त रख दिये । आँ हज़रत सल्ललाहो अलैहे वसल्लम ने एक तश्त से ख़्वान पोश हटाया जो ताआ़मे मलकूती से मामूर था जिसे मोअर्रखीन ने शीरे बिरंज की किस्म की चीज़ से तशबीह दी और ग़िज़ाये मलकूती बताया है। आप ने चन्द लुक्में (तआमें मलकूती) के आप को खिलाये जिसको खाते ही आप पर अर्ज़ व समावात का हाल आइना हो गया दूसरे ख़्वान में मलबूस फाखिरा मौजूद था । रहमत आलम सल्ललाहो अलैहे बसल्लम ने उस लिबास को पहनाया और निस्बते उवैसिया से नवाज़ा फरमयाय '' ऐ नूरे नजर तेरी दुआ बार गाहे इलाही में कबूल हुयी और अब तुझे ताम जिन्दगी खाने पीने की ''लिबास तबदील करने की ज़रूरत न होगी और तेरे वजूद से खुदा ने तमाम ख्वाहिशाते जिन्दगानी का खात्मा कर दिया। अब सारी ज़िन्दगी तू इस दुनियाँ में मरतब-ए-समदियत पर फैज़ रहेगा'' इसके बाद आका ने एक दालान की तरफ इशारा फरमाया के वहाँ ''तेरे लिए एक तख्त है जो वक्ते ज़रूरत पर हवा में परवाज़ कर सकता है और असा मौजूद है तब तुझे ज़हमते सफर बरदाश्त न करना पड़ेगा । जा और मख़्लूके खुदा को अल्लाह का पैगाम सुना''। अब आप बहुत ही अदब के साथ उठे और कदम बोसी कर के तख़्त पर सवार हुये और एक सिम्त रवाना हो गये ।

★★★

नसीबा का नसीब

हज़रते सैय्यदना अब्दुल कादिर जीलानी ग़ौसे समदानी रजि. अन्हो की दो बहने थीं। एक का नामे नामी सैय्यदा जैनब था । और दूसरी बहन का नाम सैय्यदा बीबी नसीबा था। बीबी नसीबा ला वलद (बेऔलाद) थीं। एक दिन आप घबराकर अब्दुल कादिर जीलानी रजि० अल्लाह अन्हो की बारगाह में हाज़िर हुई और दुआ की दर्खास्त की अर्ज़ करने लगी ऐ भाईजान कायनात का ज़र्रा ज़र्रा आपके फैज़ों-करम से मुस्तफ़ीद हो रहा है और मेरी गोद औलाद से खाली । बराहे करम मेरे लिए दुआ कीजिये के शादमानी का फूल खिला दे मेरी खाली गोद को औलाद की खुशी से भर दे सैय्यदा बीबी नसीबा की दुख भरी सदा ग़ौसे आज़म रजि० अन्हो ने बगौर समाअत फरमाई और लौहे महफूज़ का मुशाहदा किया और फरमाया ऐ मेरी बहन अल्लाह ताआला तुम का औलद से नवाज़ेगा लेकिन तुम्हारी औलाद की विलादत का दारो मदार ज़िन्दा शाह मदार की दुआ पर है अनक़रीब वो तशरीफ लाने वाले हैं । तुम उनसे दुआ की दर्खास्त करना जब वो दुआ तुम्हारे लिए फरमाऐंगे खुदा तुमको साहबे औलाद फरमायेगा इस वाकिए को अभी थोड़ा अर्सा ही गुज़रा था के सैय्यदना मदारूल आलमीन रजि. अल्लाह अन्हु की आमदका ज़िक्र घर घर होने लगा यह खबर सैय्यदा को पहुँची तो आप मदारे पाक की बारगाह में हाज़िर हुई और दुआ की दर्खास्त की सरकार ने इर्शाद फरमाया कि ''अल्लाह ताआला तुम को दो बेटे इनायत

फरमायेगा लेकिन एक बेटा तुम को मेरी ख़िदमत में तब्लीगे दीन के लिए पेश करना है और एक बेटा अपने पास रखना'' सैय्यदा बीबी नसीबा ने आपसे वादा कर लिया । जब तीसरी बार सरकार बगदाद तशरीफ ले गऐ। तो सैय्यदा बीबी नसीबा के दो साहब जादे थे। बड़े का नाम सय्यद मुहम्मद छोटे का नाम सय्यद अहमद था सरकार कुछ दिन बगदाद में क़याम पिज़ीर रहे । एक दिन सैय्यद मुहम्मद अपने घर की छत पर थे कि अचानक छत से गिरे और विसाल हो गया । सैय्यदा बीबी नसीबा ने जब सैय्यद मोहम्मद का बेजान जिस्म देख तो गिरिया ओजारी करने लगीं ऐसे रोने पीटने की हालत में उन्हें याद आया कि ये बच्चा तो वही है जिसको मदारे पाक की बारगाह में पेश करने के लिए मैने अहद किया था चुँके सैय्यदना मदारे आलम रजि. अल्लाह अन्हु बगदाद में इन दिनों भी मौजूद थे सैय्यदा बीबी नसीबा ने सैय्यदा मोहम्मद की लाश को सरकार की ख़िदमत में पेश की और अर्ज़ करती हैं कि ''आपकी दुआ से दो बच्चे अल्लाह पाक ने अता फरमायें जो बच्चा आपके लिए था उस को अल्लाह ने उठा लिया अब उसकी लाश हाजिर है'' सरकार ने फरमाया ऐ नसीबा तेरे नसीब का ये बच्चा नहीं। इसका नसीब कातिबे तक़दीर ने मेरे साथ तब्लीगे इस्लाम के लिए जोड़ा है। अब तुम्हारा इस पर कोई हक नहीं सैय्यदा ने रो रो अर्ज़ किया ''मुर्दो पर किसका हक होता है सैय्यदना मदारूल आलमीन रजि० सैय्यद मोहम्मद के सिरहाने खड़े होकर इर्शाद फरमाया कि '''ऐ जमालु-द्दीन जानेमन जन्नती उठ अल्लाह के

हुक्म से'' सैय्यदना मदारूल आलमीन की ज़बाने मुबारक से ये अल्फ़ाज़ निकले ही थे कि सैय्यद मुहम्मद कलमऐ शहादत पड़ते हुए उठ खड़े हुए इसके बाद से सैय्यद मुहम्मद जमालउद्दीन जानेमन जन्नती के नाम से मशहूर हो गये आपको जुम्मनजती, जमील शाह और दाता, जमाल शाह और भी मुख्तलिफ नामों से जाना पहचाना जाता है। दुनियाँ के कई मुल्कों में आप के चिल्ले और निशानात हैं। अलग़रज़ सैय्यदना ग़ौसे आलम रजि० ने सैय्यदना मदारे आज़म कि इस करामत के बाद में अपने दो भतीजे और दो भाँजे उनकी बारगाह में पेश कर दिए।

लोगों सुनो ये बीबी नबीसा का वाकिया
आले नबी थी पाई थी निस्बत रसूल की
बगदाद में मुकीम थे ये आले मुस्तफा
पहुँची नासिबा ख़िदमते पीराने पीर में
कहने लगीं मुझ पे इनायत की हो नज़र
गौसुल वरा ने बीबी नसीबा से ये कहा
जो कुत्बेदीन हैं और विलायत के ताजदार
बीबी मैं तेरे वास्ते कर सकता हूं दुआ
जिस दम करेगें वो दुआ औलाद के लिए
कुत्बुल मदार बज्मे वेला में है बावकार
गौसुलवरा की बात नसीबा ने जब सुनी
कुछ साल गुजरे फिर किया अल्लाह ने करम
फैली हर एक सिम्त ये बगदाद में खबर
था मान्द सा नसीब का तारा चमक उठा
पाया शरफ हुजुरिए कुत्बुल मदारक का
पहले अदब से कुत्बे जहाँ को किया सलाम
मुद्दत से इन्तिजार में करती थी आपका
मैं लावलवाद हूं कीजिए मुझ पर शहा करम

यह लावलद थीं और निहायत थी जाहेदा
आली नस्ब थीं बेटी थी गोया बुतूल की
पीराने पीर की थीं बहन ये शर्फ भी था
यानी वली व गौस जमा व दस्तगीर में
बच्चों से गोद खाली है वीरान मेरा घर
बगदाद में जब आयेगें वो कुत्बे दूसरा
उनके हुजूर तुम भी पहुँचना बाइन्किसार
ये फैसला है कातिबे तकदीर ने लिखा
भर देगा रब तुम्हारा भी दामन मुराद से
उनकी दुआ पे है तेरी औलाद का मदार
आएंमदार दिल से दुहाई खुदा की दी
रखे मदोर पाक ने बगदाद में कदम
आए मदार जिन्दह वली कुत्बे बहरोबर
बीबी नसीबा तेरा नसीबा चमक उठा
जैसे फजा में आ गया मौसम बहार का
करने लगी फिर अर्ज कि वलियों के ए इमाम
कहना है मुझको आपसे एक दिल का मुद्दआ
भर जाए मेरी गोद भी मिट जाए दिल का गम

अर्जी नसीबा बीबी की शह ने है जब सुनी
फरमाया फिक्र मत करो पाओगी तुम खुशी

अल्लाह तुम को बेटे इनायत करेगा दो
लेकिन मैं अपने साथ में रखूंगा एक को

ए बी नसीबा शाफ़ए महशर की लाडली
कुरबानी हश्र में ये तेरे काम आएगी

बीबी नसीबा ने किया वादा के ए मदार
दो बेटों पर खुदा जो मुझे देगा अख्तियार

एक बेटा होगा मेरी निगाहों के सामने
एक बेटा दूगी आप को तबलीग के लिए

वादा किया ये बीबी नसीबा ने आप से
फिर आप हिन्द के लिए बगदाद से चले

हिन्दुस्तां को दीन का गुजलार कर दिया
जुल्मत कदे को मतलए अनवार कर दिया

कश्मीर में उड़ीसा में पंजाब व सिन्ध में
गुजरे मदारे पाक के कुछ साल हिन्द में

पांव से हक के बुतल के कांटे कुचल दिए
फिर उसके बाद हज के इरादे से चल दिए

मक्के में पहुंचे हो गए अरकाने हज तमाम
और उसके बाद आए मदीना वो खुश खराम

फिर कैसे दी मदीने में आका ने हाजिरी
इस को बयान कैसे करे फने शाएरी

होने लगा तजल्लिए इरफान का जुहूर
जब मस्जिद नबी में मराकिब हुए हुजूर

अल्लाह के नबी ने कहा ए बदीअ दी
जाओ कि तश्ना लब है बहुत हिन्द की जमी

आगाह कर दे कुफ्र के अंजाम से उसे
सैराब कर दे बादए इसलाम से उसे

आका चले मदीने से अब हिन्द की तरफ
बख्शा जो अपने कदमो से बगदाद को शरफ

दो लाल थे नसीबा के आंगन में जो फशां
बगदाद जिन के नूर से रौशन था वे गुमां

तारीफ उनकी करता था हर एक खाश व आम
अहमद था इक और मोहम्मद था इक का नाम

एक रोज ये नसीब के घर हादसा हुआ
कोठे पर एक बच्चा गया खेलता हुआ

हालात से था उस के हर एक शख्स बेखबर
बच्चा गिरा बलन्दी से जिस दम जमीन पर

अरमानों के चमन को वो वीरान कर गया
बच्चा था जीता जागता लम्हे में मर गया

रो रो नसीबा कहती थी हए हए ये क्या हुआ
सीने से मेरे कल्ब का टुकड़ा जुदा हुआ

तुझसे हुआ जुहूरे करामत ए खुश नसीब
तू तो मदार की है अमानत ए खुश नसीब

कुछ वादे याद आए जो सरकार से किए
चल दी मदार दी से मुलाकात के लिए

जब ये सुना मुकीम है बगदाद में मदार
मिलने के वास्ते हुई आका से बेकरार

हाथों में अपने बच्चे का लाशा लिए हुए
कुरान के रिहल पे सिपारा लिए हुए

पहुंची मदारे पाक की खिदमत में और कहा
जो देना आपको था वो बच्चा तो मर गया

ए फखरे नाज़े गुलशने तैबा ऐ नाज़नीन
अब ये बता कि इस पे तेरा हक तो कुछ नहीं

जिस दम कहा ये हज़रते कुत्बुल मदार ने
उसका जवाब ये दिया उस बेकरार ने

कहने लगी कि रहता हैं मुर्दो पर किसका हक
उस हक के पास जा चुका है इसपे जिसका हक

आवाज इस तरह से मदार जहां ने दी
उठ ए जमाले दीने मुहम्मद ऐ जन्नती

अल्लाह की है इस में रजा जाने मन उठो
और मेरे साथ दीन की तबलीग को चलो

सरकार के ये जुम्ले जो निकले जुबान से
उठ बैटे कल्मा पढ़ते नसीबा के लाडले

दिल पे नसीबा बीबी के ऐसा असर हुआ
फिर उनके साथ दूसरा बेटा भी कर दिया

चर्चा हुआ करामते कुत्बुलमदार का
पीराने पीर गौसे दो आलम ने जब सुना

गौसे जमां ने दीन की तब्लीग के लिए
और दो भतीजे आपके हमरहा कर दिए

हिम्मत न दी के काम मे हारी तमाम उमर
आका के साथ सब ने गुजारी तमाम उमर

नोट- भतीजों के मज़ारात मकनपुर शरीफ़ के करीब गूजेपुर में हैं और सैय्यद मोहम्मद की मज़ारे मुकद्दस ''हेल्सा जतीनगर'' बिहार में और सैय्यद अहमद का मज़ार गाँव दरगाह शरीफ कुलुवाबन्द आज़मगढ़ में मरजये ख़लायक है ।

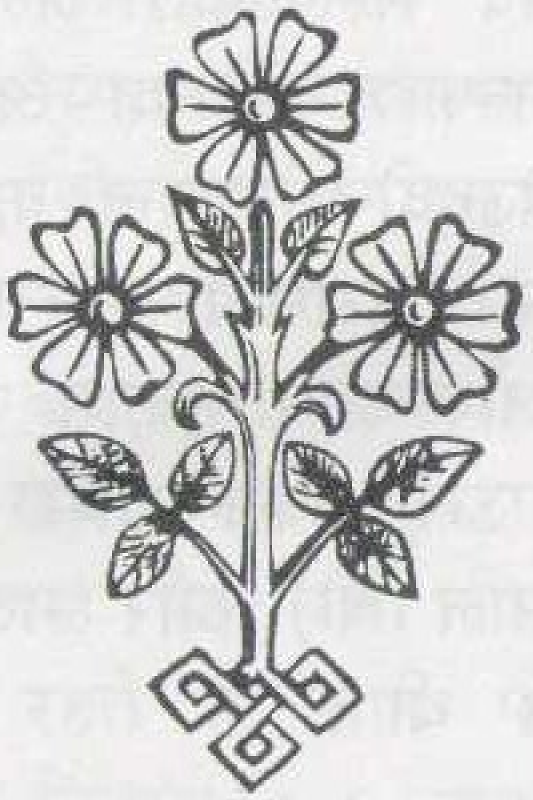

फैज़ाने मदारूल आलमीन

ये वाकिया 505 हिजरी का है बगदाद शरीफ में हज़रत शहेनशाहे औलिया सैय्यद बदीउद्दीन कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु से दो वाकियात रूनुमा हुये पहला तो ये कि आपने बगदाद शरीफ़ पहुँच कर क़याम फरमाया वहाँ उस वक्त हज़रत गौसे समनानी महबूबे सुब्हानी हज़रत शाह सैय्यद शेख़ अब्दुर कादिर जीलानी रजि. अल्लाह अन्हु का ज़माना था। आप असमाए जलालीया के ज़िक्र में मुस्तग़रक थे आप से जलाले रब्बानी का ज़हूर था यह आलम था कि आप की निगाहे मुबारक जिस तरफ उठ जाती थी तो उड़ते हुए तुयूर जल-भुनकर राख हो जाते थे। हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु ने उनकी कैफियत मुलाहिज़ा फरमाकर इर्शाद फरमाया "हमारे जददे करीम मुहम्मद सल्ललाहो अलैहे वसल्लम रहमते आलम है" इन अल्फाज़ में वह असर था कि हज़रत ग़ौसे समनानी महीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रजि. अल्लाह अन्हु पर असमाये जलालीया का इज़हार मोकूफ़ हो गया। और आप मुक़ामे जलालीया से मंज़िले जमाल पर पहुँचें उस वक्त गौसे आज़म का आलम शबाब (उम्र 35 साल थी) और मदारे आज़म की उम्र शरीफ 263 बरस थी।

शाह जीलानी ने था इस्में जलाली का जहमर ।
जब नज़र उठती थी गिर जाते थे जल भुन कर तुयूर
चश्में रहमत से तेरी सोजे़ तजल्ली स जलाल ।
बन गया एक आन में शमें शविस्ताने जमाल

काबाए अहले नज़र

282 हिजरी में तमाम दुनिया तक दीने हक पहुँच चुका था और हिन्दुस्तान के सिंध और पंजाब में भी कहीं कहीं मुसलमान नज़र आते थे लेकिन हिन्दुस्तान में आबादी के लिहाज से दुनियाँ का बड़ा मुल्क है। इस दौर में मुल्के शाम शहरे हलब के एक बाप का मादर ज़ाद वली बेटा यानी हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन कुतुबुल मदार जब हाज़िरे बारगाहे रिसालत हुए तो हुक्म मिला ऐ बदीउद्दीन तुम हिन्दुस्तान जाओ हिन्दुस्तान को तुम्हारी ज़रूरत है। आप रहमत-ए-आलम का हुक्म पाते ही हिन्दुस्तान की तरफ़ रवाना हुए और हिन्द को मरकज़े तब्लीग़ करार दिया। जुनूबी हिन्दुस्तान के साहिली इलाकों में कारे तब्लीग़ अन्जाम देते हुए और तजल्लियाते बिलायत से मुनव्वर फरमाते हुए आप खम्बात पहुँचें। गुजरात का ये इलाका सरासर कुफ्रिस्तान था। सैय्यदना मदारूल आलमीन ने यहाँ पहुँच कर लोगों के सामने इस तरह इसलाम पेश फरमाया कि लोग मुसख्खर होते चले गये और पूरे इलाके में आपकी करामातो बिलायत का शोहरा हो गया रफता रफता ये खबर सारे गुजरात में तश्त अज़बाम हुई के एक अल्लाह का वली जिस के चेहरे अनवर पर सात नकाब रहते हैं खाने पीने और लिबास के रददो बदल से बे नियाज 6-6 माह एक सॉस में गुजार देने वाला, माबूद को एक बातने वाला, सीरते मोहम्मदी का एक ऐसा पैकर तशरीफ लाया है, जो अपनी मिसाल आप है।

गुजरात के लोग जब आपको देखते तो आप के मुती व फरमा बरदार हो जाते और आपकी हर बात को तस्लीम करते यहाँ तक के जहाँ नाकूस की आवाज़ें गूजाँ करती थी वहाँ अज़ान की सदाये गूँजने लगी और तबाये मुनक़लिब हो गए। इसी दौर में हज़रत शेख मुहम्मद लाहौरी रह० अलैह हज के इरादे से चले थे तो उड़ती उड़ती ये खबर आप तक पहुँची ख्याल किया चलो मैं भी हाज़िरी की सआदत हासिल करूँ सरकार की ख़िदमत में हाज़िर हुए उस वक़्त आप गुजरात के सूरत शहर में जलवा अफरोज़ थे। शेख मोहम्मद ने देखा तो. देखते ही रह गये।

अदीव देख तो रूए मदार का आलम
नकाब डाले हैं चेहरा दिखाई देता है
हर चन्द के सात नकाब

चेहरे अनवर पर पड़े रहें लेकिन नूरे- खुदा है कि फुटा पड़ता है। शम्मए रिसालत के ईद गिर्द पर्वानों की भीड़ भाड़ किसी को दुनिया की तलब है तो कोई जामें कौसर का तलबगार है नियाज़ो नाज़ का ये आलम देख कर शेख़ मुहम्मद भूल गए कि में किस इरादे से घर से चला था काफी अर्से हुज़ूर की हुजूरी में हाज़िर रहे फिर वक्त कहाँ ठहरता है गुजरता गया एक दिन शेख़ मुहम्मद के दिल में ये ख्याल पैदा हुआ के मैं हज के लिए चला था यादे सफर भी न रहा। इख़्लास की पर्ओ जंजीर बर दस्तए तक्दीर पहुँचे भी तो कैसे इस कश-मकश व ख्याल में थे के आफताबे विलायत सैय्यदना कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु फरमाते हैं के "शेख़ मुहम्मद तुमको, हज अदा न होने

का गम़ है तुम मेरा तवाफ कर लो तुम्हारा हज अदा हो जायेगा" शेख मुहम्मद ने जब अपने मुर्शिद का हुक्त सुना तो बेइख्तियार तवाफ करने लगे। तवाफ शुरू किया तो देखा कि कुबुबुल मदार नहीं बल्कि ख़ानाए काबा है जिसका तवाफ कर रहे हैं। जब तवाफ हो गया तो फिर उसी जगह पर अपने आपको मौजूद पाया। कुछ दिन गुज़र गये एक दिन फिर शेख मुहम्मद को इस ख्याल ने परेशान किया "जाने ये हज कुबूल हुआ भी या नहीं" अल्लाह के नूर से देखने वालों से कहाँ कोई बात पोशीदा रहती है ये बात भी आप पर रौशन हुई। आपने शेख़ मुहम्मद को करीब बुलाया और अपने दस्ते मुबारक को उनकी आँखों पर मस फरमा दिया। शेख़ मुहम्मद ने देखा कि मदारे पाक कि बारगाह नहीं है बल्कि खानाए काबा है और अरकाने हज अदा किये। रहमते आलम की बारगाह में हाजिरी दी पाँच माँह मुसलसल अरब की बर्गुजीदा जमीन पर कयाम किया। इसके बाद कुतुबुल मदार रजि. अन्हु की बारगाह में पहुँच गये। शेख मोहम्मद को कामिल यकीन हो गया कि मेरा हज अदा हो गया

मदारे औलिया कहते है जिनको हैं जो कुत्बे री
खबर थी आलम की कि वो इश्के महेताबों
नकाबों से छिपा रहता है वो जिनका रुखे अनवर
ये सब इन्सों जिन वल्लाह दम इन ही का भरते हैं
चले लाहौर से जब शैख भी हज के इरादे से
सदा उनके के भी जलवे सीने में मेहमान रहते थे
इधर खम्बात से सूरत मदारुल आलमीं आये
न मिल पाया सुंकू दिल को हुए मिलने को वो मुज़तर
उठाई इस कदर दुश्वारी आका की मुहब्बत में
जनाबे शैख ने देखा अजब था हाल सूरत का
थे सबआका से मिलने के लिए हैरान सूरत में
जो पहुंचे शैख लाहौरी मदारे पाक से मिलने
सफर करके बहुत दूरी से मेरे पास आया है
रसाई मिल गयी फिर शेख को उनकी खिदमत में
बुलाया पास अपने और फिर हाले सफर पूछा
थकावट दूर जैसे हो गयी एक लम्हे में सारी
बयां कर ने लगीं फिर दर्दे दिल की दास्तां आंखे
चले थे शैख करने को तवाफे खानए काबा
जनाब शैख लाहौरी का बस ये काम था अक्सर
सदा रहते थे गुम ज़ाते मदारे हर दो आलम में
मदारे पाक के अब गए आंखों में हैं जलवे
ख्याल आया खुदाया हमने भी जो हज किया होता
कुछ इस तरह से जलवे आपके है ज़हन पर छाये
जनाबे शैख के सीने में जिस दम ये ख्याल आया
कहा ऐ शैख तुम को हर घड़ी ये फिक्र होती है
तुम्हारे दिल की आरज़ू होगी इस तरह से पूरी
जो पाया हुक्म नज़दीके मदारे दो जहां आके
लगाए फरे जिस दम किब्ला अरबाबे ज़ाहिद की
जो देखा शैख ने तो इक करिश्मा सां नज़र आया
ये देखा हो गया पूरा फरीज़ा जब शरीअत का
है जिनका नाम नामी हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन
हैं करते इस घड़ी गुजरात का दौरा शहे दौरा
न खाते न पीते हैं न बैठें मक्खियां जिन पर
इन्हें जब देखते हैं बेखुदी में सजदा करते हैं
बसे थे सीने में उनके उजाले उनकी यादों की
मदारुल आलमी से मिलने को वो हैरान रहते थे
उधर लाहौर से गुजरात में शैखे हजी आए
सुना जब शैख ने सूरत में हैं सरकार जलवागर
सफर करते हुए पहुंचे जिस दम सूरत में
कि बच्चा बच्चा पढ़ता था कसीदा उनकी मिदहत का
सभी खुश थे मदारे पाक हैं मेहमान सूरत में
तो देखा हर तरफ से लोग है सरकार को घेरे
बुलाओ आज एक महेमां बहुत ही खास आया है
लगा ऐसा कि जैसे आ गये आगोशे रहमत में
मदारुल आलमी ने शैख को जब प्यार से देखा
नज़र पड़ते ही उन पर कैफियत हो गयी ताजी
कुछ इस तरह से बरसीं बन गई दिल की सदा आंखें
लगाते रह गये शमआ का चक्कर मिस्ल परवान
वो देखा करते थे शम्ओ विलायत का रूखे अनवर
कभी बेताब थीं दीदारे काबा के लिए आंखें
ना याद आया चले थे इक दिन हज के इरादे से
तवाफे खानए काबा भी करके क्या भला होता
बहुत अफसोस है हम आज तक हज भी न कर पाये
हुआ ये इन्किशाफ आका को औ इक दम जलाला आया
कि तुम अब तक तवाऐ खानए काबा न कर पाये
हमारे गिर्दे चक्कर लगा तू शैख लाहौरी
तमन्ना दीदे काबा की लिए दिल में निहां आए
नज़र के सामने उस दम थे बैतुल्लाह के जलवे
जहां आक़ा थे जलवागर वहां काबा नजर आया
नज़र के सामने था जलवागर काबा तरीकत का

मदारुल आलमीन अजमेर में

जब पहली बार सरकार कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु अजमेर में पहुंचे ये दौर तीन सौ हिजरी का था आप ने कोकला पहाड़ी पर कयाम फरमाया। आपके तशरीफ़ लाने से पहले हुसैन सिंह सवार रह० अलैह और उनके साथी शहीद हो चुके थे। तारागढ़ पर इन शहीदों की लाशें बगैर कफ़न पड़ी हुई थी। जिन से तकबीरों की आवाज़े आया करती थी। लोग इनको सुन कर बहरे हो जाया करते थे। तरह तरह की मुसीबतों में गिरफ्तार थे वहां के लोंगो ने कोशिश करके जादूगरों को बुलाया और हर चन्द चाहा की यह आवाज़ें बन्द हो जायें लेकिन तमाम कोशिश बेकार साबित हुई। आप जब तशरीफ ले गए तो अजमेर के बसने वालों को ख्याल आया कि एक बार मुसलमान आए तो उन्होनें शहर का ये हाल किया आज फिर से आये हैं न जाने क्या हो बहर हाल इनमें जो लोग संजीदा थे वह कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु की खिदमत में हाज़िर हुए और अपनी मुसीबतों का इज़हार किया आपने बिला तखसीसे मजहबो मिल्लत तसल्ली व तशफ्की दी और वादा फरमाया के " तुम लोग जाओ आज की रात ये आवाज़ें बन्द हो जाएगी आप ने अपने खुलफा को हुक्म दिया कि " जाओ तारागढ़ पर जो शहीदों की लाशें एक ज़माने से बगैर कफ़न पड़ी हैं जिन का पुरसाने हाल खुदा के सिवा कोई नहीं इनको दफन करके आओ आप के खुलफा ने आप के हुक्म की तामील की और शहीदों की लाशों

को दफ़न कर दिया। और रात सुकून से गुज़री। सुबह बहुत से लोग आपकी ख़िदमत में हजिर हुए। सरकार कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु ने उनकी जबान में एक खुतबा फरमाया जिसका असर यह हुआ कि वो लोग इस्लाम में दाखिल हुए।

★★★

गोश्त के टुकड़े का रोना

कन्नौज में एक शख्स रहता था वह बेऔलाद था जब हज़रत ज़िनदा शाह मदार रजि. अल्ला अन्हु की शोहरत हुई तो वह शख्स अपनी औरत के साथ मकनपुर में हाज़िर हुआ। आपने इस के हक में दुआ की इसके बेटा पैदा हुआ मगर विलादत अजीब तरह से हुई बच्चा एक गोश्त के टुकड़े के मानिन्द था। वह इस को उठाकर आपकी ख़िदमत में लाया आपने इस को बग़ौर देखा अपनी बातिनी कुव्वत से इस के नकायिस दूर कर दिये जिसके असर से वह रोने लगा और अल्लाह ने उसे ज़िन्दगी अता फरमा दी। इस की नस्ल अब तक बाकी है। वह अलराय के नाम से मशहूर हुए।

★★★

अँधे की आँखों में रोशनी हो गई

एक बार जब आप सूरत शहर पहुँचे तो चारों तरफ से लोग आप की ज़ियाररत के लिए हाज़िर होने लगे। रास्ते में एक नाबीना बेठा हुआ था जो सवाल किया करता था। आपको इसकी हालत देखकर रहम आ गया और आपने उसी वक्त वज़ू करके वज़ू का पानी आंखों पर लगाया और दुआ के लिए हाथ उठाए आपकी दुआ बारगाहे खुदावन्दी में फौरन कबूल हुई और अंधा आदमी आंख वाला हो गया इस करामात से सूरत और आस-पास के इलाकों में रहने वाले आप की बहुत इज़्ज़त करने लगें। और आपका दम भरने लगे। यहां तक के हर कौम व हर मज़हब के लोग आप पर जान निसार करते थे। जिस तरह मुसलमानों में शाह बिरादरी के लोग कसरत से और अपने आप को शाह मदार कहते थे इनकी रूहानी निसबत सैय्यदना मदारे पाक से है। इसी तरह हिन्दू भाइयों में भी बिरादरी के लोग मौजूद हैं। जो हज़रत मदारे आज़म से इश्क व मोहब्बत रखने की वजह से शाह कहलाते हैं और आज भी शाह के खिताब से पुकारे जाते हैं मेला बंसत पंचमी के मौके पर आज भी हिन्दुओं और मुसलमानों में एक बहुत बड़ा संगम होता है जो बंसत के नाम से मशहूर है।

क़ाज़ी साहब शोलह खा गए

एक दिन हज़रत सैय्यदना मदारूल आलमीन रजि० अल्लाह अन्हु अपने हुजरे शरीफ के बाहर अपने चन्द खुलफा और मुरीदिन के साथ तशरीफ फरमा थे और ''रमूजो असरार, तसव्वुफ व फ़करो सुलूक'' पर तक़रीर फरमा रहे थे कि यकायक एक गिरोह बाशिन्दगांने कन्नौज का हाज़िरे खिदमत बाबरकात होकर फरयादी हुआ के ''या हजरत आप इब्ने आले रसूल हैं। आपके घर से हमेशा खलकुल्लाह कि मदद और मुश्किल कुशाई होती रही है हमेशा बहबूदी व फलाही उम्मत मदद नज़र रहीं हैं हुज़ूर हम आपके खादीमान वबा से तबाह हो रहे हैं आप हमारी हालत पर नज़रे रहमते फरमाइए और हम मुसीबत के मारों को इस वबा से दूर फरमाइए जिसने हमारी बस्तियों को वीरान कर दिया है आपने सबकी दास्ताने रंज सुनकर हज़रत शहाबुद्दीन किदवाई रह० अलैह को हुक्म दिया कि ''जल्दी जाओ और इस मर्ज़ को खत्म करो शहाबउद्दीन इन फरियादीयों के साथ गये और तीन रोज शहर से बाहर ही रहकर मशगूले दुआ रहे। तीन रोज के बाद तेज आंधी सी उठी और तमाम इलाका तारीक हो गया इस गर्द व गुबार के अंधेरे से एक शोला निकलकर हाजी शहाबउद्दीन रह. अलैह के नज़दीक आया हाजी शहाबुउद्दीन रह. अलैह ने मुहँ खोलकर उस शोले को खा लिया ।

इसके बाद जो गर्द व गुबार था वो खत्म हो गया इस शोले के खाने से काज़ी शहाबउद्दीन के पेट में दर्द आर पेचिस शुरू हो गई वाकिए की खबर जब हजरत शाह मदार रजि. अल्लाह अन्हु को पहुंची तो आप तशरीफ लाए। काजी साहब के पेट पर हाथ फेरा दर्द पेचिस की शिकायत दूर हो गई और आपने फरमाया कि ''अये शहाबुद्दीन जो शोला तुमने खा लिया वो दरहकीक़त वबा थी खुदा ने तुमको शिफा दी और खलके खुदा को वबा से निजात अता फरमाई।

औरत मर्द हो गई

एक बार हुजूर सैय्यद कुतुबुलमदार रजि० अल्लाह अन्हु ने अपने एक खादिम को करीब के एक गांव में भेजा कि कोई माकूल जगह देखकर इबादत खाना बनाए वह खादिम जब गांव में पुहंचें तो वहां के जादूगरों ने इनको बकरी बना दिया आप को इस हाल की खबर हुई तो आप तशरीफ ले गए तो इन ग़ाफिलों ज़ालिमों कि दो बांदिया जो कहीं से उधार लाए थे आपकी नज़र पड़ते ही अल्लाह ने इनके जिस्म बदल डाले और वह मर्द हो गई। बंदियों को बदला हुआ देखकर सब लोग आपकी अजमत समझ गए और आपके हुजूरी में हाजिर हुए और अपनी खताओं कि माफी चाही। आप ने माफ फरमा दिया और खुदा से इनके जिस्म बदलने की दुआ मांगी खुदा ने फिर जिस्म बंदियों जैसे कर दिए और उन लोगों ने सच्चे दिल से इस्लाम कुबूल किया।

कुएं में सैलाब

एक बार हज़रत जिन्दाशाह मदार रजि० अल्लाह अन्हु अपने मुरिदों के साथ अफगानिस्तान के पाये तख्त शहर काबुल में एक मुनासिब जगह पर कयाम फरमा थे आप के खादिम कुएं का पानी लाने के लिए गए ओर वह जब पानी लाने के वास्ते कुएं पर पहुंचें तो कुछ शर पसन्दों ने खादिम को पानी भरने से रोका और पानी न लाने दिया । खादिम ने वापस आकर किस्सा बयान किया। आप ने जलाल में आकर इर्शाद फरमाया कि जाओ कुएं से कह देना कि ''शहीदे करबला के पोते बदिउद्दीन ने तुझे बुलाया है'' आपके खादिम दुबारा कुएं पर पहुंचे और जो कुछ आपने फरमाया था वह सब कुंए से कह दिया । कुंए ने जिस वक्त नामे नामी इस्म गरामी आपका सुना इस कदर जोश में आया कि पानी ऊपर आकर चारों तरफ फैल गया और एक तूफानी शक्ल इख्तियार कर ली । जब आपके खादिम ने अपने सब बर्तनों में पानी भर लिया तो कुंए का जोश कम हो गया और पानी तहमें ठिकाने पर पहुंच गया जब पानी रोकने वालो ने यह करामत देखी तो आपके क़दमों पर आकर गिर पड़ो और अपने कुसूर की मांफी मांगी। आपने उन्हे माफ़ कर दिया और वह सब हिदायत याफ्ता हो गए।

मशहूर है जमाने में काबुल का वाकया
हर एक सिम्त कुफ्र व जलालत का राज था
महबूब थी हर एक को शैतान की दोस्ती
हर एक सर थे बतल परसती में सज्दहरेज
इस दरजा थे प्यासे रिसालत से बेखबर
ये बात पाई जाती थी हर आम व खास में
काबुल में जलवा गर थे विलायत के ताजदार
फिर डोल बाधा सोचा की पानी चलो भरें
देखा जो उन को गुस्सा हुए साकिनान शहर
कहने लगे जो डोल तेरा डूब जाए गा
खुलफाए बावकार ने मन्नत हजार की
पानी है सब के वास्ते खुल्फा ने ये कहा
पानी से रोकते हो भला कैसा जुल्म है
पानी को बे कारार थे खुल्फा मदार के
पानी यहां ना पाओगे कुफ्फार ने कहा
कहने लगे की पार की खिदमत में अब चलें
पहुंचे मदारे पाक की सब बारगाह में
देखो गुलाम साकिए कौसर भी यहा
बातें सुनी जो लहजए रन्जो मलाल में
कुत्बुल मदार ने कहा जाओ कुंए के पास
चल वास्ता है फात्हे बदरो हुनैन का
खुलफाए बा वकार कुएं के गए करीब
तेवर जो बदले माथे पे गुस्से से बल पड़ा
मन्ज़र ये देखकर हुए खुश सारे तश्ना काम
मन्ज़र ये देखकर सभी हैरान हो गए
सोचा जो हो गई है खता उस को मान लें
कर दीजिए माफ जो हम से खता हुई
कुफ्फार जो थे साहिबे इमान हो गए

पहुंचें वहां पे कुत्बे जहां आले मुस्तफा
और गुमराही की गर्द में लिप्टा समाज था
इंसा के दिल में पलती थी इंसा की दुश्मनी
नफरत से प्यार और मुहब्बत से था गुरेज
खाते ना एक साथ थे दो लोग बैठ कर
पानी भी लोग पीते थे न एक गिलास में
पहुंचे कुऐ प पानी को खुल्फाए बावकार
पानी पिए बराए इबादत वज़ू करें
और फिरका परस्ती का उगलने लगे जहर
पानी नजास्ती में मेरा डूब जाएगा
अलहे जफा ने फिर भी ना की बात प्यार की
खल्लाके दो जहाँ की ये नेमत हैं बे बहा
इस जुल्म का बदला खुदा तुम्हें कहीं ना दे
थे पानी पानी शर्म से चश्मे दयार के
समझो के साकिनाने बलद की है ये रजा
कौसर के वरसा दार के पोते मदार में
और अर्जी पेश करदी विलायत पनाह में
पानी भी भरने देते नहीं हैं ये बद जबाँ
प्यारा हुसैन पाक का आया जलाल में
कहना बइफ्तिखार न होना जरा हिरास
पानी तुझे बुलाता है पोता हुसैन का
जाकर कुएं के पास कही बात ये अजीब
फरमाया ज्हुक्म पानी को पानी उबल पड़ा
पानी उधर चला जहां आपका का था कयाम
कुफ्फार सारे सर बे गरीबान रह गए
घबरा के पहुंचे खिदमते कुत्बुलमदार में
हम आ गए हैं आका गुलामी में आपकी
काबुल के के लोग दिल से मुसलमान हो गए

सूखा पेड़ा हरा हो गया

एक दिन आप वाज फरमा रहे थे। हज़ारों का मजमा था एक शख्स लोगों से पूछने लगा के यहां ये मेला कैसा लगा हुआ है? इस कदर लोग कहां से इकठ्ठा हो गए? शेख मोहम्मद बका उल्लाह ने बताया के हज़रत सैय्यदना बदीउद्दीन कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु मेरे पीरो मुर्शिद हैं। जो के दरजए कुतुबुल मदार पर फैज हैं। वह शख्स ज़ेहन में ख्याल करने लगा के ऐसी विलायत का मैं कायल नहीं जब तक मैं खुद अपनी आंखों से कोई करामत देख न लूं कुतुबुल मदार रजि० अल्लाह अन्हु को उस के इस ख्याल से आगाही हुई तो आपने उस शख्स को अपने करीब बुलाया और दरयाफत किया ए शख्स तेरे सामने जो दरख्त है वह किस चीज़ का ? कहने लगा "हज़रत एक मुद्दत गुज़री इस पर बिजली गिरी थी जिसको बराबर देखता हूं कौन बताए ये किसका दरख्त है फिर आप ने फरमाया "ऐ शख्य तू अपनी आंख उठा, इस दरख्त की तरफ देख अब तू बताऐगा ये दरख्त किस चीज़ का है। उस शख्स ने नज़र उठाई तो क्या देखता कि दरख़्त हरा-भरा हो गया नारियल के फल दिखाई देने लगे सरकार ने दरफरयात किया अब तो तेरी मंशा पूरी हो गई वो शख़्स आपके कदमों में गिर पड़ा और कहने लगा हज़रत मुझे माफ फरमा दें आपने उसे उठाते

हुए फरमाया मुझे ये खतरा है की इसको कोई काट न डाले ये बद बख़्ती का निशान न बनें। इस दरख़्त के फलों में ये तासीर है। इसको खाने पीने वाला आंखों के जुम्ला अमराज से महफूज रहता है ।

★★★

फूल की बातें

एक बार शेख ईसा रह. अल्लाह अलैह ने आप की खिदमत में एक केवड़े का फूल पेश किया। शेख रह. ने अर्ज़ किया खुशबूदार फूल (कुबुल करना) जायज़ नहीं आप ने इर्शाद फरमाया कि बशर्ते मशकूक व मुशतब्ह न हो। इस सिलसिले में शेख ने कुछ ज़्यादा गुफ़्तगू करनी चाही मगर अल्लाह की कुदरत के और आप की करामत से वह फुल बा ज़बान हो गया और बात चीत करने लगा । और अपने मुशतबह व मशकूक होने की शहादत दी। इस करामत से शेख ईसा रह. अल्लाह अलैहे को भरे मजमें में। शरमिंदा होना पड़ा । इस किस्म के बहुत से वाक़यात जौनपुर में जहूर में आये हैं।

★★★

डूबी किश्ती निकल गई

एक बार हज़रत कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हू दरिया के किनारे बैठे हुए थे। एक सौदागर ने अपना माल किश्ती में भरा और रवाना हो गया । थोड़ी देर में किश्ती दरिया में डूब गई । एक दहकान इस हाल को देख रहा था। इस ने शोर मचाया और भाग कर हज़रत शाह मदार की खिदमत में हाजिर हुआ और तमाम हाल अर्ज किया। आपने एक मुठ्ठी खाक उसको दी और फरमाया दरिया में डाल दें उसने ऐसा ही किया । किश्ती नमूदार हो गई उस ताजिर ने जो करामात देखी तो हाजिरे खिदमत हुआ और आपे हालात से तौबा की और अपने हम राहियों के साथ इमान वाला हो गया।

मुर्दा खोपड़ी बोल उठी

एक मरतबा सरकार हज़रत बदीउद्दीन कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु एक मैदान से गुज़र रहे थे। आपके खुलफा भी हमराह थे हज़रत ख्वाजा सैय्यद अबू तराब फनसुर रहमतउल्लाह अलैह का बयान है के इन्सान की खोपड़ी आपको नज़र आई और जब करीब पहुंचे तो अप उसकी तरफ मुखातिब हुये और फरमाया तू कौन है? तेरा किस्सा क्या है? अल्लाह ताआला ने उसे बोलने की ताकत अता फरमाई अर्ज़

किया ऐ अल्लाह के वली मैं फलां बिना फलां की मजदूरी करता था । और जो पैसे मुकर्रिर थे खर्च कर खुद और बाल बच्चों में खुश रहता था अचानक हज़रते इजराइल अलैहिस्सलाम आ गए और मेरी रूह कब्ज़ कर ली 12 साल का अरसा गुजर गया तरह तरह के आलाम व मुसीबत और आज़ाब में मुबितला हूं और दर बदर की ठोकरें खा रहा हूं खोपड़ी की रूदाद सुनकर हज़रत सैय्यदना कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु को गम हुआ और बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में आजज़ी के साथ अर्ज़ किया मालिको मौला इस बेजान को ज़िन्दगी अता फरमा दे आपकी दुआ कुबूल हुई और इस खोपड़ी को जिस्म और जान अता हुई इस का नाम आपने ज़मज़मा रखा और 12 साल तक जिन्दा रहा ।

तसररूफाते कुतुबुल मदार

आप अरब मुमालिक की सैर करते हुए अजम में पहुंचे और खुरासान में भी चन्द दिन कयाम फरमाया बहुत से लोग मुस्तफीद हुए वहां एक बुजुर्ग शेख नसीरूद्दीन को अपकी तशरीफ आवरी का हाल मालूम हुआ लेकिन आप से मिलने नहीं गये इत्तिफाक से हज़रत जमालुद्दीन जानें मन जन्नती जो हज़रत कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु के खलीफा है हमराह थे सैर की गरज से निकले और शेख नसीरूद्दीन से मुलाकात हुई दौराने गुफ्तगू में फरमाया आप ने हज़रत कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु से मुलाकात नहीं की उन्होनें जवाब में कहा मुझे क्या जरूरत है जैसे वह वली वैसे मैं भी वली और कुछ अल्फाज़ उनकी जुबान से सख्त निकल गए जो हज़रत कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु की शान के खिलाफ थे हज़रत सैय्यद जमाल उद्दीन रजि. अल्लाह अन्हु को इन बातों से सदमा पहुंचा आपने उसी वक्त उनकी विलायत को सलब कर लिया और वहां से चल दिए और अपने पीरे मुर्शिद की खिदमत में हाज़िर हुए। आपने इर्शाद फरमाया "जमालउद्दीन नसीरूद्दीन की बातों ने तुम्हें परेशान कर दिया" वह वजहे अदब खामोश रहे अभी कुछ वक्त ही गुजरा था कि देखते क्या है? के नसीरूद्दीन चले आ रहे हैं और आते ही हज़रत कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु के कदम बोस हुए। हज़रत जिन्दा शाह मदार रजि. अल्लाह अन्हु

सैय्यद जमालुद्दीन की तरफ इशारा फरमाया उन्होनें वह सलब शुदा विलायत फिर वापस लौटा कर दी ।

लाहे के चने चबाना

हज़रत मदारे पाक कोकला पहाड़ी अजमेर शरीफ में कयाम फरमा थे कि अधरनाथ नाम का एक जादूगर आपकी शोहरत व मकबूलियत को आम होते देखकर एक दिन लोहे के चने का थैला आप को पेश किया आप ने फरमाया "मेरा तो रोजा है मेरे हम राहियों में तकसीम कर दो" जब वह लोहे के चने आपके मुरीदिन व खुलफा के हाथों में पहुचें तो सबने मिल कर इन चनों को चबा लिया जादूगर इन लोगों का चेहरा ताकता था और हैरान था के हज़रत कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु ने एक चना अपने दस्तेमुबारक से इस पहाड़ी पर दफन कर दिया जिसका बहुत बड़ा एक पेड़ निकला और फल भी आम फलों से बड़ा आया जब यह, जागूदर ने देखा तो उसे भी ताज्जुब हुआ कलमा पढ़कर अपने तमाम साथियों के साथ इस्लाम में दाखिल हुआ जिस की औलाद आज भी जोगी कहलाती है ।

फैज़ाने मदार रजि० अल्लाह अन्हु

हज़रत अहमद रजि. बड़े सह सवार थे वह एक दिन घोड़ा कुदा फिरा रहे थे दिल में ये ख्याल गुजरा के जो आराम मुझ को हासिल है वह किसी को भी नहीं । यकायक घोड़े का पैर फ़िसला और घोड़े से गिर गए बांए पैर में सख्त चोट आई बेहोश हो गए इतने में हज़रत कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु तशरीफ़ लाये और फरमाया अहमद बेहोशी में कब तक पड़े रहोगे उठो और तौबा करो वह उठे और अपने ख्याल से तौबा की और चाहा के हज़रत के क़दम चूम लें। मगर तकलीफ की वजह से हरकत न कर सके। हज़रत कुतुबुल मदार रजि. अल्लाह अन्हु ने घोड़े को आवाज़ दी वह दौड़ता वापस आया आप उनको एक गांव में ले गए वहां एक जर्राह था आप ने फ़रमाया इस नौजवान का इलाज करो उसने अर्ज़ किया ये इलाज मेरे इम्कान से बाहर है। यह बचेगा नहीं आपने फौरन अनार के छिलके जो वहाँ पड़े हुए थे पिसवा कर ज़ख्मों पर छिड़के फौरन खून बंद हो गया और ज़ख्म अच्छा हो गया और चन्द रोज़ में वह तन्दुरूस्त हो गए । फिर बैअत की दरख्वास्त की आपने सिलसिलाए मदारिया में दाखिल किया और वह मक्का शरीफ़ के सफर में आप के साथ रहे ।

★★★

जानदार का जनाज़ा

मौलाना शहाबुद्दीन मलेकुल उलमा आप काज़ियुल कुज़्ज़ात के ओहदे पर फाएज़ हैं। काज़ी साहब ने जब कुतुबुल मदार के आदत व करामत का शोहरा सुना तो तमाम बातों को महज़ हवाई समझा काज़ी साहब ने कुतुबुल मदार की बार गाह में चन्द सवालात पेश किए । हज़रत कुतुबुल मदार ने काज़ी साहब के सारे सवालों के जवाब दिए नौबत यहां तक आ पहुंची के काज़ी साहब मौसूफ ने एक आदमी को मुर्दे की तरह कफन पहनाकर मसनुई जनाज़ा तैयार किया और चन्द आदमियों के साथ वह जनाज़ा ख़िदमत में भिजवाया और उन लोगों को हिदायत की आपसे नमाज़ पढ़ाने को कहें। मक़सद ये था के आप रौशन ज़मीर बुजुर्ग हैं तो ज़िन्दा की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ेगे और पढ़ा तो मसनुई बुज़ुर्ग का हाल खुल जाएगा । ग़रज़ लोग जनाज़ा लेकर आप के ख़िदमत में पुहंचे और नमाज़ पढ़ने के लिए आप से अर्ज़ किया आप उठे और नमाज़ पढ़ा दी और फिर हुजरे के अन्दर तशरीफ ले गये । लोगों ने कह कहा लगाकर सर से कफ़न हटाया तो वह आदमी मर चुका था यह हाल काज़ी शहाबउद्दीन को मालूम हुआ तो आप फौरन हज़रत कुतुबुल मदार रज़ि अल्ला अन्हु की बारगाह में हाज़िर हुए और माफ़ी की दरख्वासत की ।

तासीरे दुआ

एक बार बंगाल में बारिश न होने की वजह से कहत पड़ गया फसलें तबाह हो गई अनाज कमयाब हो गया मखलूके खुदा फाकों से मरने लगी शहर के लोग जमा होकर हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए और बारिश के लिए रब्बे काएनात से दुआ करने की दरख्वास्त की मख़लूके खुदा को परेशान देख कर आप तड़प उठे आपने दुआ के लिए हाथ उठाए अर्ज़ करने लगे ऐ मेरे रब मैं बन्दा हूं अहसासे शरमिन्दगी के साथ तेरे दर पर हाज़िर हूं। अपनी मख़लूक़ पर रहम फरमा और अपने प्यारे महबूब मोहम्मद सल्ललाहो अलैह वसल्लम के तुफैल में बाराने रहमत फरमा अल्लाह ने आप की दुआ कुबूल फमराई ऐसी मुस्ला धार बारिश हुई कि लोगों को वापस होना दुश्वार हो गया सारा शहर सैराब हो गया। लोग खुशी से अपने अपने घर वापस गए पूरे बंगाल में आपके फ़जलों कमाल की शोहरत आम हो गयी।

जामिया महज़र-उल-उलूम वक़ारिया मदारियह

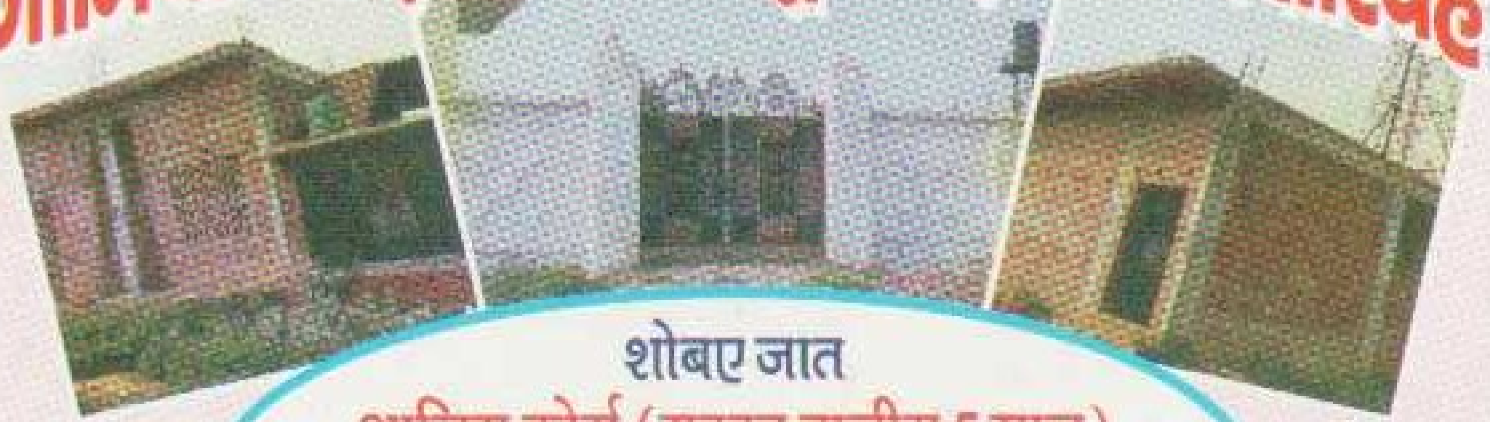

शोबए जात

आलिम कोर्स (मुद्दत तालीम 5 साल)

क़िरअत व हिफ़्ज़ कोर्स, शोबा दर्स तसव्वुफ़

शोबा अंग्रेज़ी व शोबा कम्प्यूटर

तसनीफ़ो तालीफ़े ख़ानवादए वक़ारिया मदारियह

सूफ़ियाए इस्लाम व जदीद साइन्स

मदारुल आलमीन का शरई जवाज़ / अहले खिदमात बातिनया

(अबुल अज़हर अल्लामा सैयद मंज़र अली मदारी)

तारीख़े मदारे आलम (उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी, गुजराती, बंगाली)

मदार का चाँद / मीम से मीम तक / ताहा / (इकरा-मजमूए कलाम)

(कारी अल्हाज सैयद महजर अली मदारी)

सैय्यदुस्सादात कुतबुलमदार रज़ि० / आफताबे विलायत

मदारे शरिअत / (मदारे निजात-मजमूए कलाम) / फ़िक़ीह मसाईल

(मुफ्ती सैयद शजर अली मदारी)

सायका बरख़िरमने मुफ्तीयाने रिज़विया / सैफ़े मदार

(अल्लामा सैयद जुलफिक़ार अली मदारी रह.)

जुलफिक़ारे बदीई / मामूलात अबुल वक़ार

(कुत्बे आलम अबुल वक़ार सैयद कल्बे अली मदारी रह.)

फज़ाएले अहलेबैत अतहार व इरफान कुत्बुल मदार

(अल्लामा सैयद मुख़्तार अली दिवान दरगाह आस्ताना मदारे आज़म)

अर्बी से उर्दू तर्जुमा अलकवाकेबुद दरारिया फ़िमनाकिबे तनवीरे मदारियह

मुर्शिदे कामिल / मोईने आमिल

(मौलाना मोहम्मद बाक़र जायसी वक़ारी मदारी)

आलमी शजरए मदारियह

(हज़रत मेंहदी हसन वक़ारी मदारी) बेती रायबरेली

मक़ामाते औलया अल्लाह, अफ़ज़लियते सिद्दीक अकबर, बेटियां अल्लाह की रहमत

(मोहम्मद आरिफ़ मन्ज़री मदारी) फाज़िले अल अज़हर यूनिवर्सिटी, मिस्र

Mobile : 7860105441, 9918966866, 9935586434

Website : www.madareazam.com • Email : syedshajarmadari@gmail.com

Al-Madar Offset Kanpur (M) 09616584408